अवैध खनन से निपटने के लिये भू-स्थानिक सर्वेक्षण

चर्चा में क्यों?

हाल ही में **हरियाणा ने राजस्थान सीमा के पास** अरावली पर्वतमाला **का** भू-स्थानिक सर्वेक्षण करने का आदेश दिया है। इस सर्वेक्षण में हरियाणा में **प्रतिबंधित** खनन क्षेत्रों **का सीमांकन किया जाएगा** और अवैध खनन पर अंकुश **लगाने के लिये राजस्थान में लाइसेंस प्राप्त खदानों की पहचान की जाएगी।**

मुख्य बिंदु

- **सर्वेक्षण का परिचय:**
  - **हरियाणा अंतरिक्ष उपयोग केंद्र (HARSAC)** द्वारा आयोजित इस सर्वेक्षण का उद्देश्य **विभिन्न पहाड़ियों पर हरियाणा और राजस्थान के अधिकार क्षेत्र को परिभाषित करना** और राजस्व रिकॉर्ड को अद्यतन करना है।
- **क्षेत्राधिकार संबंधी मुद्दों पर विचार:**
  - **अवैध खनन** माफिया अरावली पहाड़ियों पर अधिकार क्षेत्र की अस्पष्टता का लाभ उठाते हैं।
  - प्रवर्तन ब्यूरो ने रवा गाँव में 6,000 मीट्रिक टन पहाड़ी से अवैध खनन के लिये प्रथम सूचना रिपोर्ट (FIR) **दर्ज की।**
- **अवैध खनन:**
- **परिचय:**
  - अवैध खनन, सरकारी प्राधिकारियों से **आवश्यक परमिट, लाइसेंस या विनियामक अनुमोदन के बिना** भूमि या जल निकायों से खनिजों, अयस्कों या अन्य मूल्यवान संसाधनों का निष्कर्षण है।
  - इसमें पर्यावरण, श्रम और सुरक्षा मानकों का उल्लंघन भी शामिल हो सकता है।
- **समस्याएँ:**
- **वातावरण संबंधी मान भंग:**
  - इससे वनों की कटाई, मृदा क्षरण और जल प्रदूषण हो सकता है तथा वन्य जीवों **के पर्यावास नष्ट हो सकते हैं,** जिसके गंभीर पारिस्थितिक परिणाम हो सकते हैं।
- **परिसंकटमय:**
  - अवैध खनन में अक्सर पारा **और साइनाइड जैसे खतरनाक रसायनों का उपयोग होता है,** जो खनिकों और आसपास के समुदायों **के लिये गंभीर स्वास्थ्य संकट उत्पन्न कर सकते हैं।**
- **राजस्व की हानि:**
  - इससे **सरकारों को** राजस्व **की हानि हो सकती है,** क्योंकि खननकर्त्ता उचित कर और रॉयल्टी का भुगतान नहीं कर पाएँगे।
  - इसका महत्त्वपूर्ण आर्थिक प्रभाव हो सकता है, विशेषकर उन देशों में जहाँ प्राकृतिक संसाधन राजस्व का प्रमुख स्रोत हैं।
- **मानवाधिकार उल्लंघन:**
  - अवैध खनन के परिणामस्वरूप मानव अधिकारों का उल्लंघन भी हो सकता है, जिसमें ज़बरन श्रम, बाल श्रम और सुभेद्य आबादी का शोषण शामिल है।

अरावली

- **परिचय:**
  - **अरावली पर्वतमाला गुजरात से राजस्थान होते हुए दिल्ली तक विस्तृत है, इसकी लंबाई 692 किमी तथा चौड़ाई 10 से 120 किमी. के बीच है।**
    - **यह शृंखला एक प्राकृतिक हरित दीवार के रूप में कार्य करती है, जिसका 80% भाग राजस्थान में तथा 20% हरियाणा, दिल्ली और गुजरात में स्थित है।**
  - अरावली पर्वतमाला दो मुख्य श्रेणियों में विभाजित है - **सांभर सिरोही श्रेणी और राजस्थान में सांभर खेतड़ी श्रेणी,** जहाँ इनका विस्तार लगभग 560 किलोमीटर है।
  - यह थार रेगिस्तान **और** गंगा के मैदान के बीच एक **इकोटोन के रूप में कार्य करता है।**
    - इकोटोन वे क्षेत्र हैं जहाँ **दो या अधिक पारिस्थितिक तंत्र, जैविक समुदाय या जैविक क्षेत्र मिलते हैं।**
  - **इस पर्वतमाला की सबसे ऊँची चोटी गुरुशिखर (राजस्थान) है,** जिसकी ऊँचाई 1,722 मीटर है।

- **अरावली का महत्त्व:**
  - अरावली पर्वतमाला **थार रेगिस्तान को** सिंधु-गंगा के मैदानों पर अतिक्रमण करने से रोकती है, जो ऐतिहासिक रूप से नदियों और मैदानों के लिये जलग्रहण क्षेत्र के रूप में कार्य करती है।
  - इस क्षेत्र में **300 देशी पौधों की प्रजातियाँ,** 120 पक्षी प्रजातियाँ तथा सियार और नेवले जैसे विशिष्ट पशु मौजूद हैं।
  - **मानसून** के दौरान, अरावली पहाड़ियाँ **मानसून के बादलों को पूर्व की ओर निर्देशित करती हैं,** जिससे उप-हिमालयी नदियों और उत्तर भारतीय मैदानों को लाभ होता है। सर्दियों में, वे **उपजाऊ घाटियों को शीत पश्चिमी पवनों से बचाते हैं।**
  - यह रेंज वर्षा जल को अवशोषित करके **भूजल पुनःपूर्ति में सहायता करती है,** जिससे भूजल स्तर पुनर्जीवित होता है।
  - अरावली **दिल्ली-NCR के लिये "फेफड़ों" के रूप में कार्य करती है, जो क्षेत्र के गंभीर वायु प्रदूषण** के कुछ प्रभावों को निम्न करती है।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/geospatial-survey-to-combat-illegal-mining